



३५७९

श्रीमंत सरकार गायकवाड महाराजा साहेबे  
शेहेर वडोदरामां स्थापन करेली  
संगीत शाळामां चालती गायननी  
चिजोनूं  
प्रथम पुस्तक.

---

. आ पुस्तक  
मुर्तुजाखां मौलाबक्ष  
सरकारी गायनशाळाना पेहेला आसिस्टंट मास्तर  
एओए,  
श्रीमंत सरकार सयाजीराव महाराजा गायकवाड  
सेनाखासखेल समशेर बहादुर  
एमनी मदतथी,

मुंबईमां  
जोईट स्ट्याक प्रिंटिंग प्रेस  
तथा  
शेहेर वडोदरामां  
बडोदावत्सल छापखानामां छाप्युं.

---

संवत १९४४.

सन १८८८.

આ પુસ્તક સન ૧૮૬૭ ના ૨૫ મા આક્ટ પ્રમાણે નોંધાવી  
ગ્રંથ કર્તાણ સર્વ હક્ક પાંતાને સ્વાધીન રાખેલા છે.

# अनुक्रमणिका.

| पाठ. | राग.                | पृष्ठ. | पाठ. | राग.                  | पृष्ठ. |
|------|---------------------|--------|------|-----------------------|--------|
| १    | शंकराभरण .....      | १      |      | तान विषे.             |        |
| २    | " .....             | २      | १    | शंकराभरणनी तानो ..... | १७     |
| ३    | " .....             | २      | २    | काफीनी तानो .....     | २०     |
| ४    | " .....             | २      | ३    | शंकराभरणनी तानो ..... | २२     |
| ५    | " .....             | ३      | ४    | " .....               | २४     |
| ६    | " .....             | ३      | ५    | कामोदनी तानो .....    | २६     |
| ७    | " .....             | ३      | ६    | कल्याणनी तानो .....   | २८     |
| ८    | काफी .....          | ४      | ७    | हमीरनी तानो .....     | ३०     |
| ९    | शंकराभरण .....      | ४      | ८    | बिहागनी तानो .....    | ३२     |
| १०   | " .....             | ५      | ९    | देसनी तानो .....      | ३४     |
| ११   | कामोद. ....         | ६      | १०   | खमाचनी तानो .....     | ३६     |
| १२   | कल्याण .....        | ६      | ११   | शंकराभरण .....        | ३९     |
| १३   | हमीर .....          | ६      | १२   | " .....               | ४०     |
| १४   | बिहाग .....         | ७      | १३   | मैरुं .....           | ४२     |
| १५   | देस .....           | ८      | १४   | बिलावल .....          | ४२     |
| १६   | खमाच .....          | ८      | १५   | कालंगडो .....         | ४३     |
| १७   | एमन कल्याण .....    | ९      | १६   | नारायणी .....         | ४४     |
| १८   | बाधेश्रीकानडा ..... | १०     | १७   | आसावरी .....          | ४६     |
| १९   | भैरवी .....         | ११     | १८   | परज .....             | ४७     |
| २०   | झांझोटी .....       | १२     | १९   | रामग्री .....         | ४८     |
| २१   | मांड .....          | १३     | २०   | भिमपलास .....         | ४९     |
| २२   | मांझी .....         | १४     |      |                       |        |
| २३   | माळकोस .....        | १५     |      |                       |        |
| २४   | शंकराभरण .....      | १६     |      |                       |        |

## सूचना.

---

अमारा पिता संगीत तत्त्ववेत्ता प्रोफेसर मौलाबक्षजी  
पासेथी संपादन करेली आ अनुपम युक्तिसह विद्या, बीजा  
सर्व लोकेने उपयोगी थई पडे एवा हेतुथी अमोए गोठवी  
प्रगट करी छे. तेनो लाभ गायनकळाना हितेच्छु लोक  
सारीरीते लेशे एवी उमेद छे.

ग्रंथकर्ता.

---

# पाठ १.

राग शंकराभरण.

. ताल चतुश्र, जाति तेतालो, विलंबकाळ, मात्रा १६

सा सा

नी नी

ध ध

प प

म म

ग ग

री री

सा सा

सा

अवरोही

विराडि

34/92



५३५



## पाठ ८.

रा० काफ़ी. ताल चतुश्चजाति, तेतालो, विलंबकाळ, मात्रा १६.

रब्बरटेसे पाप कटेहे, लोभीका सब मान घटेहे; जो नर संगी हे विषयोंके, सो कैसेकर पाप झटेहे.

॥ १६ ॥ गुरीरीगुप्सा | रीममपुसा | नीधुमुधप | गुरीरीनीप्सा | सासासारीनी | धुममपुसा |  
 ५५५ रब्बरटेसे | पापकटेहे | लोभीकासब | मानघटेहे | जोनरसंगी | हेविषयोंके |

॥ नीधुमुधप | गुरीरीनीप्सा |  
 सोकैसेकर | पापझटेहे. ॥

## पाठ ९.

रा० शंकराभरण. ताल दादरो, विलंबकाळ, मात्रा ६.

गानाहो हरिगुण भक्तिसे, लेनाहो बोध सदगुरुसे.

॥ ६ ॥ सा०रीगु | मपुषु | नीसा०री | सा० | सा०नीधु | प०मुगु | रीसा०नी | सा०  
 गा०नाहो | हरिगु | णभक्ति | से | लेनाहो | बोधस | दगुरु | से

## पाठ १०.

रा० शंकराभरण. ताल जलद दादरो, मध्यकाल, मात्रा ६.

साधन न कोहु किया, दे सुमति हे श्रीहरि ! कोन करे आप विना सुख मुजे आये.

६ सा० रीग म० पु० ध० नी० सा० सा० नी० ध० प० मु० ग० री० नी० सा० नी० ध० प० धु० प० म० ग० री० सा०  
सा० ध० न० न० कोहु किया० दे० सुमति० हे श्रीहरि० नी० को० न० करे० आ० प० विना० सुख० मुजे० आ० ये०

## पाठ ११.

रा० कामोद. ताल तेवरो अथवा तीश्रजाति, त्रिपुट, मध्यकाल, मात्रा ७.

लेनाहो सतगुरुसे सुबोध, जासेहो जात काम मोह कोध;

आवेगा विवेक विचार तब, पावेगा धन सनमान सब.

७ सा० प० प० प० ध० प० म० ग० री० स० नी० री० री० प० ग० म० री० ग० सा० री० नी० सा०  
ले० ना० हो० स० त० गु० रु० से० से० सु० बो० ध० नी० जा० सै० हो० जा० त० का० म० मो० ह० को० ध०

प० सा० सा० री० सा० नी० ध० प० म० ग० म० री० री० री० प० ग० म० री० ग० सा० री० नी० सा०  
आ० वे० गा० वि० वे० क० वि० चा० र० त० ब० पा० वे० गा० ध० न० स० न० मा० न० स० ब०

## पाठ १२.

रा० कल्याण. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, विलंबकाळ, मात्रा १६.

जगमें जनमाके पायो ग्यान न तो दुःखके वि बोवेगा, ब्रह्म भजेगा तो सुखसे तुं सेवेगा.

ॐ १६ गग रीसासानीसु री री ग री री ग म, प म, ग रीसु गग रीसासानीसु  
५५५५ जग में जन मी के पायो ग्यान न तो दुःखके वि बोवेगा जग में जन मी के

ॐ नृध ध प म, ग म, म, प म, ग रीसु  
ब्रह्म भजेगा तो सुखसे तुं सेवेगा

## पाठ १३.

रा० हमीर. ताल चतुश्रजाति, चोतालो, मध्यकाळ, मात्रा १२.

परब्रह्म भज हो जीव तुं, ओर सब तज हो जीव तुं; विषयको सजता क्यां तुं, मूढले समज ना सदा तुं.

ॐ १२ सा सारीगम धनीसा नीध प प पगमरी गमध प  
००॥ प भजहो जीवतुं ओ र सब तजहोजी

ॐ

रीसा॒ ग॒ म॒थनी॒री॒ सा॒नीध॒ ध॒प॒ प॒ प॒ ग॒मरी॒ ग॒म॒ ध॒ प॒ री॒ सा॒  
व॒ तुं॒ वि॒ ष॒ य॒को॒ स॒ ज॒ता॒ स॒यु॒तुं॒ मू॒ ढ॒ले॒स॒ म॒ज॒ना॒स॒ दा॒ तुं॒

## पाठ १४.

रा० बिहाग. ताल झपतालो, मध्यकाळ, मात्रा १००.

गुरुदेव तव सेव करी, सुजन सब तरत; ओर सब मूढ तो दुःख सहत ओर मरत;  
तव चरण शरण ग्रही, सुमति यह जीव धरत.

७

ॐ

नी॒सा॒गु॒म॒ प॒नी॒सा॒नी॒ ध॒प॒ म॒ग॒म॒ स॒गु॒म॒प॒ नी॒री॒ सा॒ गरी॒ सा॒नी॒ध॒  
गु॒रु॒दे॒व॒ त॒व॒ से॒व॒ करी॒ सु॒जन॒ सब॒ त॒र॒त॒ ओर॒ सब॒ मू॒ढ॒ तो॒ दुःख॒ सह॒त॒

ॐ

प॒म॒ग॒री॒ सा॒ ग॒म॒प॒नी॒नी॒ सा॒नी॒ध॒प॒म॒ गरी॒ग॒म॒प॒ ध॒म॒ गरी॒सा॒  
ओर॒म॒र॒त॒ त॒व॒ च॒र॒ण॒ श॒र॒ण॒ ग्रही॒ सु॒म॒ति॒य॒ह॒ जी॒व॒ ध॒र॒त॒

## पाठ १५.

रा० देस. ताल चतुश्चजाति, तेतालो, मध्यकाळ, मात्रा १६.

हे मन मेरा हरि भज नीत, खटपट सब तज स्थिरकर चित;  
या जग दुःखरूप सब जन जानत, तुं नाही समजत, चलता विपरीत.

१६ रीमप नीसा | सासा नीप धप धम नीप धपम रीग | मप धम गरीगसा | रीमप मममप  
॥॥ हेमन मेरा | ह रि भजनीत खटपट सब तजस्थिर करचित | याजग दुःखरूप

पपनीनी | सासा नीप सासा | रीरीरीसा सासा नीप धपमग  
सबजन | जानत तुं नाही | समजत चलता विपरीत

## पाठ १६.

रा० खमाच. चतुश्चजाति, तेतालो, मध्यकाळ, मात्रा १६.

जग यहहै क्षणिक ताते असत तदापि जन सब मानत सतवत;  
कहेत हैं नृसिंह नित हरि भज तजि भ्रम यह ताते सुख होत भोग भोगत.

ॐ १६  
 ग म प ध नी सा नी नी ध सा नी ग म री सा  
 ग य ह है क्ष णी क ता ते अ स त दा पि

ॐ नी सा ग म प ध सा नी ध प म ग म प ध म नी ध नी सा नी सा  
 ज न सं व मा न त स त व त क हे त हें नृ सिं ह नि त ह रि

ॐ सा नी सा री सा नी ध प ग म री ग सा री नी सा नी ध प  
 भ ज त जी भ्र म य ह ता ते सु ख हो त भो ग भो ग त

### पाठ १७.

रा० एमनकल्याण. ताल चतुश्चजांति, तेतालो, विलंबकाल, मात्रा १६.

याजगमें आया नरधारी मानुखी तन क्युं सुधरतना, मुंढ भयोयाचे विषयादि जासे होवे अपयश रतना.

ॐ १६  
 नी ध ध प मु ग म म गं री नी री गु म म ग री री नी री सा री री गु मु  
 या ज ग में आ यान र धा री मा नु खी त न क्युं सु ध र त ना मुं ढ भ यो या

ॐ

री ग म पु धु नी धु नी प ध म प ग री गु  
चे वि ष या दि जा से हो वे अ प य श र त ना

## पाठ १८.

रा० बाधेश्रीकानडा. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, मध्यकाळ, मात्रा १६.

देख समे यह खोटो आयो नारी ना माने स्वामीको, सुत न गीनत निज सुखद  
पिताको लेत धरम सब नीच गुलामीको.

ॐ

१६ नी० ध ध नी० ध प ग० म ग० म री सु नी सा पु ग० म ग० म री सु  
॥॥॥ दे ख स में यह खो टो आ यो ना री ना मा ने स्वा मी को;

ॐ

सा री म प नी० ध प ध म ध प म गु० री री सा नी० ध प म प  
सु त न गी न त नि ज सु ख द पि ता को ले त ध र म स ब

ॐ

म० ध प ग० म री सा  
नि च गु ला मी को

## पाठ ११.

रा० भैरवी. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, मध्यकाळ, मात्रा १६.  
श्रवण सुनत मुख बोलत बचन ध्यान सुंघत फूलन रुप देखत द्रगनहे;  
जाके चक्षु हैं प्रकाश अंधकार भयो नाश वाके जहां रहे तहां सुरजकी धुपहे.

१६ नी० सां ग० म० धु० प० ध० प० नी० ध० प० म० प० म० ध० प० म० ग० री० ग० प० म० ध० प० म० ग० म०  
॥॥॥ श्र० व० ण० सु० न० त० मु० ख० बो० ल० त० व० च० न० ध्रा० न० सुं० घ० त० फू० ल० न० रु० प० दे० ख० त०

ग० री० सा० री० नी० सां ग० म० धु० प० ध० प० नी० ध० प० म० ध० ध० नी० सां री० सां  
द्र० ग० न० हे० श्र० व० न० सु० न० त० मु० ख० बो० ल० त० जा० के० च० क्षु० हे० प्र०

री० सां सां सां नी० ध० प० सां ग० री० ग० सां री० नी० सां ध० नी० ध० प०  
का० श० अं० ध० का० र० भ० यो० ना० श० वा० के० ज० हां० र० हे० त० हां०

म० ग० ग० म० ग० री० सां री०  
सु० र० ज० की० धु० प० हे०



## पाठ २०.

रा० झीझोटी. ताल जलद, दादरो, मध्यकाळ, मात्रा ६.

सृष्टी करता रबके सिवा कौनहे कहोतो सही, भ्रमसे भुल परी ग्यानसे कहोतो सही; परमेश्वर

पर उपकारी परब्रह्म परहितकारी आदिअंत वोहीहे फीर कोनहे कहो तो सही.

६  
००  
रु ग म प म ध प म ग री म प म गु सा री ग म पु ५ प ध स्यु नीप ध ध पु ॥  
सृष्टी कर ता र ब के सि वा को न हे क हो तो स ही भ्र म से भु ल प री ॥

म प म गु सा री ग म पु म प नी नी नी सा नी सा सा सा सा नी नी नी  
ग्या न से क हो तो स ही प र उ प का री प र ब्र ह्म

म  
सा री सा नीप ध प पु सा नी सा ध नीप ध प प प म प म गु सा री ग म पु  
प र हि त का री आ दि अं त वो ही हे फीर को न हे क हो तो स ही

## पाठ २१.

रा० माढ. ताल बिलंदी अथवा होरी, (दिपचंदी), मध्यकाळ, मात्रा १४.  
 चेतके चित्त लगाना जगतमें चेतके चित्त लगाना; आयेंथे तबतो धन नही लाये जाते कछुना लेजाना.

१४ ग० सा ग म पु धु नी प धु पु म ग म प ध नी री सा नी धु पु ग म री सा  
 चेतके चित्त ल गा ना ज ग त में चेतके चित्त ल ग म री सा

ग म सा पु ग म री सा नी सा नी ध प ग म री सा  
 गा ना ज ग त में आ ये धे त ब तो ला ये

ग म सा पु ग म री सा नी सा नी ध पु ग म री सा  
 जा ते क छु ना ले जा ना ज ग त में चेतके चित्त ल

ग म सा पु ग म री सा  
 गा ना ज ग त में



## पाठ २३.

रा० मालकौंस. ताल तिश्त्रजाति, सुलफाक, मध्यकाल, मात्रा ८.

जनम लीयो नरको, करत काम खरको; होवत नाही घरको,

ना होत मुंढ परको.

८ सा सा म | ग म | सा नी ध्र | ग म ध | सा नी ध्र | म् ग् म सा |  
 ज न म | लि यो | न र को | क र त | का म | ख र को |

ग म ध्र | नी सा | ध्र नी सा | सा नी ध्र | म सा | नी ध्र म् ग् म् सा |  
 हो व त | ना ही | घ र को | ना हो त | मुं ढ | प र को |

## पाठ २४ सलामी.

रा० शंकरा भरण, ताल चतुश्चजाति, रूपक विलंबकाल, मात्रा ६.

॥ हे हरि सुतन धन दे सुधाम सुवाम दे सुजन, हे प्रभु रायको प्रजाको साधुको सर्वको दे सुमन;

दिजीये आपको यजन भजन, रेन दिवस हे विभु करसके हमसु चिंतन.


॥ ६ सा सा री नी सा री नी सा री सा नी सा सा री  
०। हे ह रि सु त न ध न दे सु धा म सु वा म दे सु ज न हे प्र भु


॥ नी सा री ग ग म ग री सा री सा नी सा री म ग म पु म ग  
रा य को प्र जा को सा धु को स र्व को दे सु म न दी जी ये आ प को

॥ म म म ग ग सि ग म ग री सा ग म पु ध प म ग री ग सा प ध नी  
य ण न भ ज न रे न दि व स हे वि भु क र स के हे म सु चि त न





## तान ३.


 सा॒री॒ग॒म॒ | प॒गु॒म॒ | सा॒री॒ग॒म॒ | प॒ध॒नी॒सा॒ | सा॒नी॒ध॒प॒ | ध॒मु॒प॒ |  
 आ॒. आ॒. आ॒. आ॒. आ॒.


 सा॒नी॒ध॒प॒ | म॒ग॒री॒सा॒ |  
 आ॒. आ॒.

## तान ४.


 सा॒री॒ग॒सा॒ | री॒ग॒सा॒री॒ | सा॒री॒ग॒म॒ | प॒ध॒नी॒सा॒ | सा॒नी॒ध॒सा॒ | नी॒ध॒सा॒नी॒ |  
 आ॒. आ॒. आ॒. आ॒. आ॒. आ॒.


 सा॒नी॒ध॒प॒ | म॒ग॒री॒सा॒ |  
 आ॒. आ॒.

## तान ५.

ॐ सा सा री री | ग. ग म म | सा री ग म | प ध नी सा | सा सा नी नी | ध ध प प |  
 आ. आ. आ. आ. आ. आ. आ. आ.

ॐ सा नी ध प | म ग री सा |  
 आ. आ.

## तान ६.

ॐ सा री ग म | प ध नी सा | सा नी ध पं | म ग री सा | सा नी सा री | सा नी ध प |  
 आ. आ. आ. आ. आ. आ.

ॐ म ग प म | ग री सा |  
 आ. आ.



## पाठ २.

रा० काफी. ताल चतुश्चजाति, तेतालो, विलंबकाळ, मात्रा १६.

१६ ग<sup>५</sup> री री ग<sup>५</sup> सा<sup>५</sup> | री म म प<sup>५</sup> सा<sup>५</sup> | नी<sup>५</sup> धु म ध प | ग<sup>५</sup> री री नी<sup>५</sup> सा<sup>५</sup> | सा<sup>५</sup> सा<sup>५</sup> री नी<sup>५</sup> |  
 ५५५५ र ब्बर टे से | पा प क टे हे | लो भी का स व | मा न घ टे हे | जो न र सं गी |

धु म म प<sup>५</sup> सा<sup>५</sup> | नी<sup>५</sup> धु म ध प | ग<sup>५</sup> री री नी<sup>५</sup> सा<sup>५</sup> | न |  
 हे वि ष गों के | सो कै से कर | पा प झ टे हे |

## तान १.

ग<sup>५</sup> री सा<sup>५</sup> री सा<sup>५</sup> नी<sup>५</sup> सा<sup>५</sup> नी<sup>५</sup> | ध नी<sup>५</sup> ध म प<sup>५</sup> सा<sup>५</sup> | नी<sup>५</sup> धु म ध प | ग<sup>५</sup> री री नी<sup>५</sup> सा<sup>५</sup> | न |  
 आ. आ. आ. आ. आ. लो भी का स व | मा न घ टे हे |

## तान २.

ग<sup>५</sup> री म ग<sup>५</sup> प म ध प | सा नी<sup>५</sup> ध म प<sup>५</sup> सा<sup>५</sup> | नी<sup>५</sup> धु म ध प | ग<sup>५</sup> री री नी<sup>५</sup> सा<sup>५</sup> | न |  
 आ. आ. आ. आ. आ. लो भी का स व | मा न घ टे हे |

## तान ३.

प ध नी० सा० री० सा० नी० सा०  
आ. .

ध नी० ध म पु सा०  
आ.

नी० ध सु ध प  
लो भी का सब

गु री री नी० सा०  
मा न ष टे हे

## तान ४.

गु री म ग० री० सा० री० सा०  
आ.

नी० ध प म पु सा०  
आ.

नी० ध सु ध प  
लो भी का सब

गु री री नी० सा०  
मा न ष टे हे

## तान ५.

सा० नी० सा० री०  
आ.

ध म पु सा०  
आ.

नी० ध सु ध प  
लो भी का सब

गु री री नी० सा०  
मा न ष टे हे

## पाठ ३.

रा० शंकराभरणः ताल चतुश्चजाति, रुपक मध्यकाल, मात्रा ६.

ॐ ६ सा॒ री॒ गु॒ म॒ पु॒ ध॒ नी॒ सा॒ री॒ सा॒ नी॒ ध॒ पु॒ म॒ गु॒ री॒ सा॒ नी॒ रु॒ सा॒  
गा॒ ना॒ हो॒ ह॒ रि॒ गु॒ ण॒ भ॒ क्ति॒ से॒ ले॒ ना॒ हो॒ बो॒ ध॒ स॒ द॒ गु॒ से॒

## तान १.

ॐ सा॒ री॒ ग॒ म॒ प॒ ध॒ नी॒ सा॒ री॒ सा॒ नी॒ ध॒ प॒ ध॒ प॒ म॒ ग॒ री॒  
आ॒ - - - आ॒ - - -

## तान २.

ॐ सा॒ नी॒ सा॒ री॒ सा॒ नी॒ ध॒ प॒ म॒ ग॒ री॒ सा॒  
आ॒ - - - आ॒ - - -

॥

तान ३.

गम् प् नी (सा नी ध् प् म् ग् री स्) । न ।  
आ. आ. ७

तान ४.

ग् री स् (री स् नी) (सा नी ध् प् म् ग्) । न ।  
आ. आ. ७

॥

तान ५.

सा ग् री स् (नी स् नी ध् प् म् ग् री) । न ।  
आ. आ. ७

॥

## पाठ ४.

रा० शंकराभरण, ताल दादरो, मध्यकाळ, मात्रा ६.

६ सा० री ग म प ध नी सा० सा० नी ध प मु ग री नी सा० ग म प सा० नी ध प  
 सा० ध न न को हु की या दे सु म ति हे श्री ह रि को न करे आ प वि ना

धु प म म री सा० सु ख मु जे आ ये

## तान १.

सा० री ग म् प म् ग् री ग् म् प ध् नी सा० री सा० नी ध् प् म् ग् री सा० नी  
 आ. आ. आ.

## तान २.

गं म् प ध् नी ध् प् म् ग् री सा० नी सा० नी सा० री सा० नी ध् प् म् ग् री सा०  
 आ. आ. आ.

तान ३.

री स् नी ध् प् म् ग् री स् नी  
आ. आ.

तान ४.

सा री ग म् ग् म् प् ध् नी स् नी ध् प् म् ग् री  
सा ध न न आ. आ.

तान ५.

सा री ग री री स् नी ध् प् स् नी ध् प् म् ग् री स्  
सा ध न न आ. आ.

॥॥॥

## पाठ ५.

रा० कामोद. ताल तिश्चजालि, त्रिपुट अथवा तेवरो, मध्यकाळ, मात्रा ७.

७ सा प प प् ध् प् म् ग् री सा नी । री री प ग् म् री ग् सा री नी सा ।  
 ले ना हो स द् गु रु से सु बो ध जा से हो जा त का म मो ह क्रो ध  
 प सा सा री सा नी ध् प् म् ग् म् । री री प ग् म् री ग् सा री नी सा ।  
 आवे गा वि वे क वि चार त ब पा वे गा ध न स न मा न स ब

तान १.

ग म् ध् नी सा री सा नी ध् प् म् ग् री सा ।  
 आ. आ. आ.

तान २.

ग म् री सा री स नी ध् प् म् ग् री सा ।  
 आ. आ. आ.

तान ३.

गम् प् ध् नी साँ री री साँ नी  
आ. आ. ध् प् म् प्  
आ. ध् नी साँ नी ध् प् म् ध् प् म्  
आ. आ. ग् री साँ

तान ४.

री री  
आ. प् प् नी नी  
आ. ध् ध्  
आ. प् प् नी नी  
आ. ग् री साँ नी साँ नी ध् प् म् ग् री साँ  
आ. आ. आ. आ.

तान ५.

साँ री ग् म्  
आ. री ग् म् प् ग् म् प् ध्  
आ. आ. म् प् ध् नी  
आ. आ. ध् नी  
आ. म् ध् प् म्  
आ. ग् री साँ



## पाठ ६.

रा० कल्याण. ताल चतुश्चजाति, तेतालो, विलंबकाळ, मात्रा १६.

१६ ग ग री सा सा न्री सा री री ग री री गु म म पु म गु री सा  
 ५५५५ ज ग में ज न मी के पा यो ज्ञा न न तो दुः ख के बी बो वे गा

ग ग री सा सा न्री सा नी ध ध पु म गु म म पु म गु री सा  
 ज ग में ज न मी के ब्र ह्म भ जे गा तो सु ख से तु सो वे गा

## तान १.

ग ग री सा सा न्री सा सा री ग री ग म ग म प म गु री सा  
 ज ग में ज न मी के आ. आ. आ. आ. आ.

## तान २.

ग.ग री सा सा न्री सा सा नी सा री सा नी ध प म प ध नी सा नी ध प गु री सा  
 ज ग में ज न मी के आ. आ. आ. आ. आ.

### तान ३.

ॐ

ग ग | री सा सा न्नी सा | सा ग री म् ग प म् ध | प नी ध सा सा नी ध प | प ध प म् ग री |  
ज ग | में ज न मी के | आ. आ. आ. आ. | आ. आ. | आ.

### तान ४.

ॐ

ग ग | री सा सा न्नी सा | ध न्नी सा री ग री सा न्नी | ध न्नी सा री ग म् प म् | ग री सा |  
ज ग | में ज न मी के | आ. आ. | आ. आ. | आ.

### तान ५.

ॐ

ग ग | री सा सा न्नी सा | री री गु री री | ग म् ध नी सा री सा नी | ध प म् ग री सा |  
ज ग | में ज न मी के | पा यो ग्या न न | आ. आ. | आ.

## पाठ ७.

रा० हमीर. ताल चतुश्चजाति, चौतालौ, मध्यकाल, मात्रा १२.

ॐ १२ सा सा री ग म धु नी सा नी ध प प ग म री ग म ध प री सा  
००॥ प र ब्र ह्म भ ज हो जी व तु ओ र स व त ज हो जी व तु

ॐ ग वि म ध नी री सा नी ध ध पु नी ध प ग म री ग म ध प री सा  
वि य को स ज ता क्युं तु मं प ग म री म ज ना स वा तु

## लयकी बांट (१)

ॐ स्म सा री ग म धु नी सा सा नी ध् प् म् ग्  
प र ब्र ह्म भ ज प र ब्र ह्म भ ज

## तान २.

सा री ग म नी सा नी ध् प् म् ग् री  
प र ब्र ह्म प र ब्र ह्म

## तान ३.

सा री ग म नी सा नी ध् प् म् ग्  
प र ब्र ह्म भ ज रे जी व तु

## तान ४.

सा री ग म नी सा नी ध् प् म् ग्  
प र ब्र ह्म भ ज रे जी व तु प र ब्र ह्म

## पाठ ८.

रा० बिहाग. ताल तीश्रजाति, झपताला, मध्यकाळ, मात्रा १०.

१० नी सा गु म प नी सा नी ध प म ग म प म ग म प  
 गु दे व त व से व करी सु जन स व त र त ओ र स व  
 नी री सा ग री सा नी ध प म ग री सा ग म प नी नी सा नी ध प म  
 मुं ठ तो दुः ख स ह त ओ र म र त त व च र ण श र ण ग्र ही

ग री ग म प ध म ग री सा  
 सु म ती य ह जी व ध र त

तान १.

नी सा गु म् प नी सा री सा नी ध प् म् गु म् प् म् ग री सा  
 आ. आ. आ. आ. आ.

## तान २.

गं रीं सां नीं रीं सां नीं ध् प् म् ग्  
आ. आ. आ. आ. आ. आ. आ. आ.

## तान ३.

गं रीं सां नीं रीं सां नीं ध् प् म् ग् रीं सां  
आ. आ. आ. आ. आ. आ. आ. आ.

## तान ४.

पं म् ग् रीं नीं ध् प् म् ग् रीं नीं रीं सां नीं ध् प् म् ग् रीं सां  
आ. आ. आ. आ. आ. आ. आ. आ.

## पाठ ९.

रा० देस. ताल चतुश्रजाति, तेतालो, मध्यकाल, मात्रा १६.

१६ री म प नी सा नी ध प ध म नी ध प म री ग म प ध म  
हे म न मे रा ह रि भ ज नि त ख ट प ट स ब त ज स्थि र

ग री ग सा री म प म म प प प नी नी सा सा नी सा  
कर चि त या ज ग दुः ख रु प स ब ज न जा न त तु ना ही

री री री सा सा सा नी ध प म ग वि प री त म

दुगन.

री म प नी सा सा नी ध प म नी ध प म री ग म प ध म  
हे म न मे रा ह रि भ ज नि त ख ट प ट स ब त ज स्थि र

ॐ

गृ गृ ग् सा री म् प्  
कर चित या ज ग

म् म् म् म् प् प् प् नी नी  
दुः ख रुं प स ब ज न

सा सा नी सा सा सा  
जा न त तु ना ही

ॐ

री री री सा सा नी  
स म ज त च ल ता

ध् प् म् ग् री म् प्  
वि प री त हे म न

## तान १.

ॐ

री म प म प नी सा  
आ. आ.

री सा नी ध प म ग री  
आ. आ.

## तान २.

री म प नी री सा नी  
आ. आ.

ध प सा नी ध प म ग  
आ. आ.



### तान ३.

रु म प | नी सा री ग | स प ध म | ग री ग सा | ॐ

आ. आ. आ.

### तान ४.

रु म प | म् ग् री सा री सा नी ध् | सा नी ध् प् नी ध् प् म् | सा नी ध् प् म् ग् री सा |

आ. आ. आ. आ.

### पाठ १०.

रा० खंमाच. ताल चतुश्चजाति, तेतालो, मध्यकाल मात्रा १६.

१६ म. ग म प ध | नी सा नी ध् | नी ध सा नी ध् प म | ग म री सा |

ज ग य ह | हे क्ष णी. क ता ते | अ स त | त | दा पि |

नी सा ग म प ध सा नी नि ध नी  
 ज न स ब मा न त स त व त क ह त हे नृ सि ह नी  
 सा नी सा नी सा नी ध प सा री नी सा नी ध प  
 त ह रि भ ज त जी ब ह्य य ह ता ते सु ख हो त भो ग भो ग त

## दुगन.

ग म प ध नी सा नी ध् नी ध् नी सा नी सा  
 ज ग य ह हे क्ष णी क ता ते अ स त त दा पि  
 नी सा ग् म् प् ध् सा नी ध् म् ग् ग् म् प् ध् नी ध् नी सा नी सा  
 ज न स ब मा न त स त व त क ह त हे नृ सि ह नी त ह रि  
 सा नी सा री सा नी ध् प् ग् म् री ग् सा री नी सा नी ध् प् ग् म् प् ध्  
 भ ज त जी ब ह्य य ह ता ते सु ख हो त भो ग भो ग त ज ग य ह

# तान १.

ग | ग म प ध | ग् म् प् ध् नी स्म री री | स्म नी ध् प् म् ग् |  
 आ. आ. आ.

# तान २.

ग | ग म प ध | ग् म् प् ग् म् प् ग् म् | प् ध् नी स्म री री स्म नी | स्म नी ध् प् म् ग् |  
 आ. आ. आ. आ. आ.

# तान ३.

ग | ग म प ध | ग् री स्म री स्म नी | ध् नी ध् प् म् प् ध् नी |  
 आ. आ. आ. आ.

स्म री स्म नी ध् प् |  
 आ.

# तान ४.

ग | ग म प ध | ग् म् री ग् री स्म री स्म | नी स्म नीष् ध् प् ध् नी री |  
आ. आ. आ.

स्म नीष् ध् प् म् ग्  
आ.

## पाठ ११.

रा० शंकराभरण, ताल जलद, दादरो, मध्यकाळ, मात्रा ६.

जय जय जय विभु अशरन शरन करन सुख जगपर जयहरि अधहर नजर तेरी सुख  
करकर हमपर भजुं; भुमिनाथ भवभय हर हाथसाही भव उतार राख्य शर्ण  
चरण समिप जनम मरन, दुःख तजुं.

६ स्म नी ध प म ग री सा | स्म नी ध प म ग री सा |  
०० ज य जय ज य वि भु | अ श र न न कर न सु ख |

ॐ

री ग री री । सा नी ध प म ग री सा । ग म ग गु प । प ध नी सा प ग ।  
 ज ग प र । ज य । हरि अ ध ह र । न ज र ते री । सु ख क र क र ।

ॐ

री ग री री । ग म । पु ग पु ग । प ध प प । सा नी ध म धु म । ध नी ध धु नी ।  
 ह म प र । भ जुं । भू मि ना थ । भ व भ य । ह र । हा थ सा ही । भ व उ ता र ।

ॐ

सा री ग री । सा नी ध प म ग । प ध नी सा प ग । री ग री री ।  
 रा ख्य श र्ण । च र ण स मि प । ज न म म र न । दुः ख त जुं ।

## पाठ १२.

रा० शंकरा भरण. ताल तिश्नजाति, एकतालो, मध्यकाळ, मात्रा ३.

प्रतापि लार्ड डफरीन साहब सब हिंदके आज आपने कीई मेहेर पाय ईधर भये; धन्य  
 धन्य गवरनर सयाजिराव रायको, मान ईजत खान पान गान श्रवण तानसह, आज

बात बनत चमत्कारी भारी भूमिमें; ईश अमर आयु दो, सयाजि ब्हइश रायनको.



॥ ५ ॥

|         |   |    |
|---------|---|----|
| (री सा) | ह | को |
| (मं ग)  | स | न  |
| (म प)   | न | य  |

---

पू स नी ध पू  
 स स  
 पू ता रा

॥ ५ ॥

पान १३.

रा० भैरुं. ताल चतुश्चजाति, सुलफाक, मध्यकाळ, मात्रा. १०

नरदेह धरी मन मंढ रह्यो अब कोन गती तेरी.

*M*

|     |                 |            |                |            |
|-----|-----------------|------------|----------------|------------|
| १०। | सा रीप ग म धप प | म ग रीप सा | सो नी धप नी धप | प म ग रीप  |
| १०। | न र दे ह        | म न मुं ठ  | को अ ब         | ते ती ग री |

— ❀ —

प्रा. १२.

रा० बिलावल. ताल चतुश्चजाति, आडो चौतालो, मध्यकाळ मात्रा १४.

नर सुनत बोलत देखत न पायो, नर हरिको न भजत जनम खायो.

ॐ १४ सा री | ग प ध सा | नी ध प नी | ध प म ग | ध सा नी ध |  
 ०।।। न र | सु न त बो | ल त दे ख | त न पा यो | न र | ह री को न |

ॐ प नी ध प | प म ग री |  
 भ ज . त ज | न म खो यो |

## पाठ १५.

रा० कालंगडो. ताल चतुश्चजाति, तेतालो, मध्यकाळ, मात्रा १६.

कर याद अलिकी दंपरदं बिसरे मेरे दंकागं, जूठीहे दुनिया खोटा जमाना  
 रखलीजो मौला लाजशरं.

ॐ १६ ध प | प म ग | मु पु | सा नी ध प | ध प | म ग ग | री सा |  
 ।।।। क र | या द अ | लि की | दं | प र | दं | बि स रे | मे रे |



મ્ ગ્ પ્ પ્ મ્ ગ્ રીપ્ | સા\* | ન મ પ ધપ્ | ની ની સા | રીપ્ સા રીપ્ | ની ની સા |  
 દં | ગં | જૂ ઠી હે | દુ નિ યા | સ્વો ટા જ | મા | ના |

ની ની સા ની | ધુપ | ની ની રીપ્ રીપ્ સા ની ધુપ | ધપ્  
 ર સ્વ લી જો | મૌ લા | લા. | જ શ | રં |

### પાઠ ૧૬.

રા. નારાયણી. તાલ વિલંબી, અથવા દીપચંદી, મધ્યકાલ, માત્રા ૧૪.  
 નમામિ મહિષાસુરમર્દિની, નમામિ મામક પાલિની, ( નમામિ ) મહિષ મસ્તક નટન  
 વેદ વિનોદિની મોદિની માલિની માનિની પ્રણતજન સૌભાગ્ય જનની ( મહિષાસુર-  
 મર્દિની; નમામિ ) શંખ ચક્ર શૂલાંકુશપાણિ શક્તિસેના મધુરવાણી પંકજ  
 નયના પંચગવેણી પાલિત ગુરુગૃહં પુરાણી શંકરાર્ધ શરીરિણી સમસ્ત  
 દેવ તરૂપિણી કંકણાલંકૃતાજનની કાત્યાયિની નારાયણિ  
 મહિષાસુરમર્દિની.



म गुरी सा | ग प ध्रु | सो नी ध्रु\* | ग प नी | ध प म ग री ग | ग सा नी ध्रु  
न य ना | पं न ग | वे णी | पा लि त | गुरु गु | हं पु रा

सा सा | सा सा सा नी ध्रु | सा सा सा ग | प प प ध्रु नी प | ग प ध्रु सा  
णी | शं क रा र्ध श | री रि णी स | म स्त दे व त | रू पि णी | कं क णां लं

री ग म ग सा | सा नी प ध्रु | ग प ध री | सो नी प | म ग री गु | सा सा  
कृ ता ज न नी | का ल्या य नि | ना रा य णि | म हि षा | सु र म दि | नी

### पाठ १७.

रा० आसावरी. ताल चतुश्चजाति, रूपक, मध्यकाल, मात्रा ६.

भज भगवान होई ईनसान धर गुरु ध्यान तज अभिमान.

नी ध प म ग री सा | री म प प ध्रु म् प | न  
भ ज भ ग वा | न हो ई ई न सा | न

॥

ध० ध० ग० री० सा० नी० ध० सा० नी० ध० प० म० ग० री० सा०  
 ध० र० गु० रु० ध्या० न० त० ज० अ० मि० मा० न०

### पाठ १८.

रा० परज. ताल चतुश्चजाति, तेतालो, मध्यकाळ, मात्रा १६.  
 कछु न पायो तु जगतमें दिव्या धिसकल प्रभुकरे भजतेहे योगी सुरमौनींद्र  
 जगनाथको आत्म सुखार्थ.

॥

१६ सा० री० नी० सा० नी० ध० म० ध० सा० नी० ध० प० म० ग० री० सा० सा० गु०  
 क० छु० न० पा० यो० तु० जं० ग० त० मे० दि० व्या०

॥

म० म० ध० ध० ध० री० सा० री० सा० नी० म० ध० म० ध० नी० सा०  
 धि० स० क० ल० प्र० भु० के० रे० ग० ग० ग० ग० म० ध० नी० सा०  
 यो० गी०

ॐ

सा री० नी सा नी ध० नी सा ग० री० नी री० सा री०  
सु० र मौ नी द्र ज ग ना आ ल सु

ॐ

सा नी म० ध० र्थ  
खा

## पाठ १९.

रा० रामग्री, ताल तिश्नजाति आडो चौतालो, मध्यकाळ, मात्रा ११.  
भज मनरे हरि नाम सदा, तज विषय संग मोहमदा, धर ध्यान तुही नरेरे तदा,  
कर शर्णगुरु दुःख न कदा.

ॐ

११ ग म प सा नी ध प् ग म री० सा सा ग म प ध प ध नी सा  
भ० ज म न रे हरि ना म स दा तज विषय संग मो

ॐ

सु० नी ध् प् म् ग् नी सा ग म प ध नी सा री० सा नी ध ग० म री० सा नी  
ह म दा ध र ध्यान तु ही न र हे कर श प गु

ॐ  
(धृ० म् पृ० ग् स्) री० सा सा  
रु० दुः ख न क दा

पाठ २०.

रा० भिमपलास. ताल चतुश्चजाति, तैतालो, मध्यकाल मात्रा १६.  
शांतिकार कृपालुहो प्रभुदिन दयाल कोई तेरी कुदस्त देखे क्याहे मजाल (शांतिकार)  
मेरी तो अल्प मती अस्तु ती करनका तु दे खयाल. (शांतिकार) पापकर्म परहरो  
दुःख सब दुरकरो नेहाल (शांतिकार) प्रतिदिन प्राणी मात्र पोशण करोहो

तुम मयाल.

ॐ १६ नी० सा ग० म प ध० म प ग० म प म ग० री० सा सा नी० धृ० प्र म प्र नी० सा  
॥॥ शां ति का र कृ पा लुहो प्र भु दि न द या ल को इ ते री कु द र त

ॐ म ग० प म ग० री० सा नी० सा ग० म नी० सा ग० म प ग० म  
दे खे क्या हे म जा ल शां ति का र मे री तो अ ल्प म ती



आड.

नी० सा ग० म् । प० ध० म प् । ग० म प म् । ग० री० सा । ३

सा० नी० ध० प् । म० प्र० नी० सा । म० ग० प म् । ग० री० सा ।

अतीत.

नी० सा ग० म् । प० ध० म प् । ग० म प म् । ग० री० म् ग० री० सा । ३

सा० नी० ध० प् । म० प्र० नी० सा । म० ग० प म् । ग० री० म् ग० री० सा ।





